1 हरिवंश राय बच्चन

(क) आत्मपरिचय (ख) एक गीत

विशेषता

- ***आत्मपरिचय:*** *यह एक गीतात्मक और आत्मकथात्मक कविता है, जिसमें संवेदनसिक्त गेय शैली (गाने योग्य) का प्रयोग हुआ है।*
- ***एक गीत (दिन जल्दी-जल्दी ढलता है):*** *यह एक प्रेमगीत है जो उनके प्रसिद्ध काव्य-संग्रह **'निशा निमंत्रण'** से लिया गया है।*

सारांश

- *यह हरिवंश राय बच्चन द्वारा रचित दो प्रसिद्ध कविताओं— **'आत्मपरिचय'** और **'एक गीत'** (दिन जल्दी-जल्दी ढलता है) का संकलन है, जो उनके **'हालावाद'** दर्शन और जीवन में **प्रेम** की महत्ता को गहराई से दर्शाता है।*
- ***'आत्मपरिचय'** कविता में कवि अपना परिचय देते हुए इस स्वार्थी संसार के साथ अपने द्वंद्वात्मक (टकराव भरे) और खट्टे-मीठे संबंधों को पूरी ईमानदारी से उजागर करता है।*
- *कवि कहता है कि वह सांसारिक जिम्मेदारियों और **'जग-जीवन'** का भारी बोझ अपने कंधों पर उठाए हुए है, फिर भी उसका जीवन प्रेम और स्नेह से पूरी तरह भरा हुआ है।*
- *कवि को सांसारिक कष्टों और कठिनाइयों का गहरा अनुभव है, लेकिन वह किसी प्रिय की मधुर यादों (सांसों के दो तार) के सहारे अपना जीवन खुशी से जी रहा है।*
- *वह **'स्नेह-सुरा'** (प्रेम रूपी मदिरा) का पान करता है और इस स्वार्थी दुनिया की परवाह बिल्कुल नहीं करता, क्योंकि यह दुनिया केवल उनकी झूठी प्रशंसा करती है जो उसके मन की गाते हैं (यानी जो दुनिया के अनुसार चलते हैं)।*
- *कवि अपने हृदय के कोमल भावों (उर के उद्गार) और **प्रेम** रूपी उपहारों (उर के उपहार) को लेकर इस दुनिया में घूम रहा है।*
- *कवि के मन में प्रेम से भरी एक अपनी ही काल्पनिक दुनिया है; उसे यह प्रेम-विहीन और **'अपूर्ण संसार'** बिल्कुल नहीं भाता, इसलिए वह हमेशा अपने सपनों का एक सुंदर संसार लिए फिरता है।*
- *सुख और दुःख, दोनों ही विपरीत परिस्थितियों में एक समान भाव से मग्न रहने की प्रवृत्ति ही कवि का **'हालावाद'** का मुख्य दर्शन है।*
- *कवि जवानी के जोश (यौवन के उन्माद) में भी गहरा दुख (अवसाद) लिए फिरता है; वह बाहर से दुनिया को दिखाने के लिए हँसता है, पर भीतर ही भीतर किसी प्रिय की याद में रोता रहता है।*
- *कवि के अनुसार संसार के लोग मोह-माया में उलझकर सच्चाई को नहीं समझ पाते और बाहरी आडंबर में ही खोए रहते हैं।*

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

- कवि दुनियादारी के इस सीखे हुए ज्ञान को भुलाने की कला सीख रहा है, क्योंकि यह नीरस किताबी ज्ञान जीवन के सच्चे और प्रेमपूर्ण अनुभव से बिल्कुल अलग है।
- **'मैं और, और जग और, कहाँ का नाता'** पंक्ति के माध्यम से कवि स्पष्ट करता है कि उसकी और इस दुनिया की सोच में जमीन-आसमान का अंतर है, दोनों के बीच कोई गहरा संबंध नहीं हो सकता (यहाँ **'और'** शब्द में **यमक** अलंकार है)।
- कवि अपने बीते हुए **प्रेम** को खंडहर के समान मानता है, फिर भी उसे किसी भव्य महल से अधिक मूल्यवान समझता है।
- जब कवि हृदय की गहरी पीड़ा से रोता है, तो अज्ञानी संसार उसे **'गाना'** मान लेता है और जब वह अपनी व्यथा को शब्दों में पिरोता है, तो लोग उसे **'छंद बनाना'** (कविता लिखना) कहते हैं।
- कवि की **'शीतल वाणी'** में भी विद्रोह और असंतोष की **'आग'** छिपी है; अर्थात् उसके शब्द भले ही शांत और मधुर हों, पर उनमें विचारों की गहरी ऊर्जा और क्रांति मौजूद है (यहाँ **विरोधाभास** अलंकार है)।
- कवि नहीं चाहता कि दुनिया उसे मात्र एक **'कवि'** के रूप में पहचाने, बल्कि वह स्वयं को एक **'दीवाना'** (प्रेम का मतवाला) कहता है जो हर जगह केवल मस्ती का संदेश लेकर घूमता है।
- दूसरी कविता **'एक गीत'** (दिन जल्दी-जल्दी ढलता है) उनके काव्य संग्रह **'निशा निमंत्रण'** से ली गई है, जो समय की गतिशीलता, नश्वरता और प्रेम की व्याकुलता को बहुत ही मार्मिक ढंग से दर्शाती है।
- **'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'** पंक्ति समय के तेजी से बीतने और किसी के लिए भी न रुकने का गहरा अहसास कराती है।
- अपनी मंजिल को करीब पाकर और रात होने के डर से एक थके हुए पथिक (राही) के कदमों में अचानक तेजी आ जाती है कि कहीं रास्ते में ही अंधेरा न हो जाए।
- इसी प्रकार, आकाश में उड़ने वाली चिड़िया को जब याद आता है कि उसके छोटे बच्चे घोंसलों (नीड़ों) से बाहर झाँक कर उसका इंतज़ार कर रहे होंगे, तो यह सोचकर उसके थके हुए पंखों में भी तेज चंचलता आ जाती है।
- इस कविता में पथिक और चिड़िया के **प्रतीकों** के माध्यम से कवि ने भावों को अत्यंत प्रभावी और मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है।
- इन सबके विपरीत, कवि जीवन में बिल्कुल एकाकी (अकेला) है; उसका घर पर इंतज़ार करने वाला या उसके लिए व्याकुल होने वाला कोई प्रियजन नहीं है।
- "मुझसे मिलने को कौन विकल?" यह अकेलापन भरा प्रश्न कवि के मन में उठते ही उसके तेजी से बढ़ते कदमों को शिथिल (धीमा) कर देता है।
- घर जाने की कोई जल्दी न होने के कारण कवि के हृदय में एक गहरी विह्वलता (बेचैनी और उदासी) भर जाती है।
- यह गीत यह स्पष्ट संदेश देता है कि **प्रेम** ही वह शक्ति है जो जीवन में उत्साह और गति भरती है; प्रेम के अभाव में जीवन धीमा और नीरस हो जाता है, जबकि समय निरंतर ढलता रहता है।

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

Theme

- ***आत्मपरिचय की Theme:*** *स्वयं को जानना दुनिया को जानने से ज्यादा कठिन है। मनुष्य का दुनिया के साथ संबंध* ***'प्रीति-कलह'*** *(प्रेम और विरोध) का होता है। जीवन* ***'विरुद्धों का सामंजस्य'*** *है।*
- ***एक गीत की Theme:*** *समय अत्यधिक परिवर्तनशील है। लक्ष्य प्राप्ति की तड़प या किसी प्रियजन से मिलने का अहसास ही हमारे कदमों में चंचलता (तेज़ी) भर सकता है, अन्यथा मनुष्य शिथिलता का शिकार हो जाता है।*

BOARD ZONE

BOARD ZONE

BOARD ZONE

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

10 भक्तिन

लेखिका — महादेवी वर्मा

विशेषता

- **विधा:** यह एक संस्मरणात्मक **रेखाचित्र** (Memoir/Sketch) है।
- **संग्रह:** यह रचना उनके प्रसिद्ध संग्रह **'स्मृति की रेखाएँ'** में संकलित है।
- **शैली:** **यथार्थवादी**, वर्णनात्मक और अत्यंत संवेदनशील चित्रण।

मुख्य विषय / Theme

- **स्त्री-अस्मिता का संघर्ष:** पितृसत्तात्मक मान्यताओं और छल-छद्म भरे समाज में एक अकेली स्त्री (**भक्तिन**) द्वारा अपने और अपनी बेटियों के हक़ की लड़ाई लड़ना।
- **अनमोल आत्मीयता:** एक **सेविका** और मालकिन के बीच सेवक-स्वामी से बढ़कर एक गहरा, आत्मीय और अटूट संबंध।

सारांश

- यह महादेवी वर्मा द्वारा रचित एक अत्यंत मार्मिक **'संस्मरणात्मक रेखाचित्र'** है, जो एक सेविका (भक्तिन) के आजीवन संघर्षशील जीवन और लेखिका के साथ उसके गहरे आत्मीय संबंधों को दर्शाता है।
- भक्तिन का असली नाम **'लक्ष्मीन'** (लक्ष्मी) था, लेकिन उसका पूरा जीवन गरीबी और अभावों में बीता, इसलिए उसका नाम उसके जीवन की वास्तविक स्थिति के बिल्कुल विपरीत था।
- चूँकि उसका कद छोटा, शरीर दुबला, होंठ पतले थे और वह गले में कंठी माला पहनती थी तथा मुंडन करवा कर रखती थी, इसलिए उसके साधारण और वैरागी रूप को देखकर लेखिका ने उसे **'भक्तिन'** नाम दिया।
- लेखिका ने **भक्तिन** के जीवन को चार मुख्य परिच्छेदों (भागों) में बाँटा है, जिसमें पहला भाग उसके बचपन और **विवाह** का है।
- उसका जन्म झूसी गाँव में हुआ था, जहाँ उसकी सौतेली माँ उससे ईर्ष्या करती थी; मात्र पाँच वर्ष की उम्र में उसका विवाह हंडिया गाँव में कर दिया गया और नौ वर्ष की उम्र में उसका गौना हो गया।
- सौतेली माँ के कारण उसे अपने **मायके** में अपमान सहना पड़ा और उससे उसके संबंध टूट गए, जिससे उसे अपने मायके में बहुत अपमान सहना पड़ा और मायके से उसके रिश्ते हमेशा के लिए टूट गए।
- जीवन के दूसरे भाग में, ससुराल में लगातार तीन बेटियों को जन्म देने के कारण उसे अपनी सास और जेठानियों की घोर उपेक्षा और **'बेटा न होने'** के ताने सहने पड़े।

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

- जहाँ जेठानियाँ और उनके बेटे दिनभर आराम करते और अच्छा भोजन (मलाई-राबड़ी) खाते थे, वहीं भक्तिन और उसकी छोटी-छोटी बेटियाँ घर और खेतों का सारा कठोर काम करती थीं और साधारण रूखा-सूखा भोजन खाती थीं।
- इन सबके बीच केवल उसका पति ही उससे सच्चा प्रेम करता था, जिसके सहारे उसने परिवार से अलग होकर अपनी एक समृद्ध घर-गृहस्थी बसा ली थी।
- दुर्भाग्य से छत्तीस वर्ष की आयु में ही उसके पति का देहांत हो गया, जिसके बाद पारिवारिक **संपत्ति** हड़पने के लिए उसके जेठौत (जेठ के बेटों) ने साजिशें रचनी शुरू कर दीं।
- संपत्ति बचाने के लिए और दूसरा **विवाह** न करने की जिद में **भक्तिन** ने अपने बाल मुंडवा लिए, गले में कंठी पहन ली और पूरी तरह सन्यासिनी बन गई।
- जीवन के तीसरे भाग में, उसने अपनी बड़ी बेटी का विवाह किया, लेकिन कुछ समय बाद ही बड़े दामाद की भी मृत्यु हो गई, जिससे घर की स्थिति और बिगड़ गई।
- संपत्ति पर कब्ज़ा करने के लिए जेठ के बेटे ने अपनी विधवा भतीजी (भक्तिन की बेटी) की शादी जबरन अपने एक आवारा और तीतरबाज साले से करवाने की साजिश रची।
- साजिश के तहत पंचायत के अन्यायपूर्ण निर्णय के कारण उसकी बेटी का विवाह जबरन कर दिया गया, जिसने कुछ ही समय में भक्तिन की सारी संपत्ति और खेत-खलिहान नष्ट कर दिए।
- एक बार लगान (टैक्स) न चुका पाने के कारण जमींदार ने भक्तिन को दिनभर कड़ी धूप में खड़े रहने की सजा दी, जिसने इस स्वाभिमानी स्त्री के आत्मसम्मान को गहरी ठेस पहुँचाई।
- इस अपमान के बाद वह कमाई की तलाश में अपना गाँव छोड़कर शहर आ गई और महादेवी वर्मा के पास **सेविका** के रूप में रहने लगी, जो उसके जीवन का चौथा और अंतिम भाग है।
- लेखिका के साथ जीवन बिताते हुए **भक्तिन** का व्यवहार पूरी तरह **देहाती** ही रहा, लेकिन लेखिका के प्रति उसका सेवाभाव हनुमान जी जैसा अटूट और समर्पित था।
- वह लेखिका की एक छाया और रक्षक बन गई; रात-दिन हर समय उनके साथ रहती और उनके काम में पूरी मदद करती।
- वह शहर में आकर भी स्वयं नहीं बदली, बल्कि उसने लेखिका को भी **'देहाती'** बना दिया; वह खाना बनाने में बहुत निपुण नहीं थी, फिर भी लेखिका को उसकी बनाई मोटी रोटियाँ और गाढ़ी दाल खानी पड़ती थी।
- वह घर में इधर-उधर पड़े पैसे-रुपयों को सँभालने के नाम पर एक मटकी में छिपाकर रख देती थी और इसे वह चोरी नहीं, बल्कि अपना अधिकार और सँभाल कर रखना मानती थी।
- भक्तिन तर्क-वितर्क करने में भी बहुत चतुर (पटु) थी; अपनी बात मनवाने के लिए वह शास्त्रों का अपने मनमुताबिक हवाला देती थी, जैसे सिर मुंडवाने को सही ठहराने के लिए कहती थी— "तीरथ गए मुंडाए सिद्ध।"
- वह जेल जाने से बहुत डरती थी, लेकिन उसका प्रेम ऐसा था कि अगर लेखिका कभी जेल जाए तो वह भी उनके साथ जेल जाने की जिद पर अड़ जाती थी।

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

- *युद्ध के समय जब लोग शहर छोड़कर भाग रहे थे, तब भी **भक्तिन** ने महादेवी जी का साथ नहीं छोड़ा और उन्हें अपना सब कुछ न्योछावर करके अपने गाँव ले जाकर पालने की योजना बनाने लगी।*
- *अंततः लेखिका यह मानती हैं कि भक्तिन और उनके बीच का संबंध किसी सामान्य स्वामी और सेवक का नहीं था, बल्कि उनके बीच एक ऐसा आत्मीय और गहरा रिश्ता बन चुका था जिसे किसी भी परिस्थिति में तोड़ा नहीं जा सकता था।*

महत्वपूर्ण घटनाएँ / विचार व तर्क

- ***देहाती बनाम शहरी:*** *भक्तिन दूसरों को अपने अनुसार बदल देती थी, पर खुद नहीं बदलती थी। उसने लेखिका को पूर्णतः **देहाती** बना दिया, लेकिन खुद कभी शहर की हवा नहीं लगने दी।*
- ***तर्क व शास्त्र की आड़:*** *वह अपने हर गलत काम (जैसे- सिर मुँडवाना, इधर-उधर पड़े पैसे उठाना) को शास्त्र का मनमाना अर्थ निकालकर सही साबित कर देती थी।*
- ***युद्ध के समय वफ़ादारी:*** *जब युद्ध के डर से सब गाँव लौट रहे थे, तब भक्तिन ने अपने जीवन भर की छुपाई हुई पूँजी (पाँच बीसी और पाँच रुपये) लेखिका को गाँव ले जाने के लिए अर्पित कर दी।*
- ***जेल जाने की ज़िद:*** *वह जेल जाने से बहुत डरती थी, लेकिन महादेवी के जेल जाने की बात सुनकर वह बड़े लाट (गवर्नर) तक से लड़ने और साथ जाने की ज़िद करने लगती थी।*

BOARD ZONE

BOARD ZONE

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

1 सिल्वर वैडिंग

लेखक — मनोहर श्याम जोशी

सारांश

- *यह मनोहर श्याम जोशी द्वारा रचित एक प्रसिद्ध लंबी कहानी है, जो मुख्य रूप से दो पीढ़ियों के बीच बढ़ते वैचारिक अंतराल (जनरेशन गैप) और बदलते जीवन-मूल्यों के द्वंद्व को बहुत ही गहराई से दर्शाती है।*
- *कहानी के मुख्य पात्र **यशोधर बाबू** (यशोधर पंत) एक सीधे-सादे और परंपरावादी व्यक्ति हैं, जो अपनी पुरानी मान्यताओं से बंधे हैं और **आधुनिकता** के अंधे अनुकरण को हमेशा **'समहाउ इम्प्रोपर'** (कुछ न कुछ गलत) मानते हैं।*
- *कहानी की शुरुआत उनके दफ्तर से होती है, जहाँ वे एक **'सेक्शन ऑफिसर'** हैं और अपनी पुरानी घड़ी के अनुसार ठीक 5 बजे तक पूरी निष्ठा से काम करते हैं और अपने मातहतों से भी यही अपेक्षा रखते हैं।*
- *दफ्तर के नए और आधुनिक कर्मचारी, विशेषकर चड्ढा नाम का एक असिस्टेंट, उनकी इस पुरानी आदत और अनुशासन का अक्सर मजाक उड़ाते हैं।*
- *जब चड्ढा बदतमीजी से उनकी शादी की 25वीं सालगिरह (**सिल्वर वैडिंग**) की बात छेड़ता है और चाय-पानी के लिए पैसे मांगता है, तो यशोधर बाबू इसे "गोरे साहबों के चोंचले" कहकर टालना चाहते हैं, फिर भी वे अपनी तरफ से तीस रुपये दे देते हैं लेकिन उस पार्टी में शामिल नहीं होते।*
- *यशोधर बाबू अपने जीवन में **'किशनदा'** (कृष्णानंद पांडेय) को अपना सबसे बड़ा आदर्श और गुरु मानते हैं; जब वे एक कम उम्र के लड़के के रूप में कुमाऊँ से दिल्ली आए थे, तब **किशनदा** ने ही उन्हें अपने क्वार्टर में शरण दी थी और बाद में अपने ही दफ्तर में नौकरी दिलवाई थी।*
- *किशनदा का एक प्रसिद्ध तकियाकलाम "जो हुआ होगा" **यशोधर बाबू** के जीवन का भी मूलमंत्र बन चुका है, जिसका अर्थ है अनिर्णय की स्थिति या जीवन में जो कुछ भी घटित हो रहा है उसे यथास्थिति मानकर चुपचाप स्वीकार कर लेना।*
- *यशोधर बाबू का एक निश्चित दैनिक नियम है; वे दफ्तर से लौटते समय पैदल बिड़ला मंदिर जाते हैं, प्रवचन सुनते हैं, ध्यान लगाते हैं, अपने पुराने मित्रों से मिलते हैं और फिर पहाड़गंज से ताजी सब्जी लेकर रात 8 बजे तक ही घर पहुँचते हैं।*
- *उनके परिवार में वैचारिक मतभेद बहुत गहरा हो चुका है; उनकी पत्नी और चारों बच्चे पूरी तरह से आधुनिक विचारों वाले बन चुके हैं और यशोधर बाबू स्वयं को अपने ही घर में अत्यंत उपेक्षित और अकेला महसूस करते हैं।*
- *उनका बड़ा बेटा भूषण एक विज्ञापन कंपनी में काम करता है और पंद्रह सौ रुपये प्रतिमाह का भारी वेतन पाता है, जो यशोधर बाबू के लिए समझ से परे है और उन्हें **'समहाउ इम्प्रोपर'** व संदेहजनक लगता है।*

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

- उनका दूसरा बेटा आईएएस की तैयारी कर रहा है (जिसने अलाइड सर्विसेज की अच्छी नौकरी ठुकरा दी थी), तीसरा बेटा स्कॉलरशिप लेकर अमेरिका चला गया है, और उनकी इकलौती बेटी शादी के सभी प्रस्ताव ठुकराकर डॉक्टरी की पढ़ाई के लिए अमेरिका जाना चाहती है।
- बेटी का जींस पहनना और बिना बांह का टॉप पहनना **यशोधर बाबू** को बिल्कुल पसंद नहीं है, लेकिन वे चाहकर भी कुछ कर नहीं पाते।
- यशोधर बाबू की पत्नी भी अब बच्चों के प्रभाव में आकर पूरी तरह आधुनिक हो गई हैं; वे बिना बांह का ब्लाउज पहनती हैं और होठों पर लाली लगाती हैं, जिसे यशोधर बाबू **व्यंग्य** में "शाम-श-नीम" (बुढ़ापे मे मुहासे) या "बूढ़ी मुंह मुहांसे, लोग करें तमाशे" कहते हैं।
- पत्नी की यह स्पष्ट शिकायत है कि पुराने संयुक्त परिवार में यशोधर बाबू ने हमेशा अपनी बुआ और दूसरों की ही सुनी, अपनी पत्नी पर कई पाबंदियां लगाईं और कभी उनका पक्ष नहीं लिया, इसलिए अब वह अपनी पुरानी दबी हुई इच्छाएं पूरी कर रही हैं और सिर्फ अपने बच्चों की बात मानती हैं।
- घर में बच्चों द्वारा लाये गए गैस स्टोव, डाइनिंग टेबल, सोफा और फ्रिज जैसी आधुनिक चीजों का आना यशोधर बाबू को बिल्कुल नहीं सुहाता; उन्हें लगता है कि उनका अपना घर अब उनका नहीं रहा और वे अपने ही घर में एक परदेसी बन गए हैं।
- जब वे मंदिर से घर पहुँचते हैं, तो यह देखकर हैरान रह जाते हैं कि बच्चों ने उनकी जानकारी के बिना ही घर पर **'सिल्वर वैडिंग'** की एक शानदार पार्टी रखी है।
- उनका घर मेहमानों से भरा हुआ है और केक काटने की तैयारी चल रही है, जिसे **यशोधर बाबू** भारतीय संस्कृति के पूरी तरह विरुद्ध मानते हैं क्योंकि उनका मानना है कि उस केक में अंडा होता है।
- वे उस पार्टी के माहौल में खुद को बहुत असहज महसूस करते हैं और बच्चों के भारी दबाव में आकर वे केक काट तो देते हैं, लेकिन उसे खाने से साफ इनकार कर देते हैं।
- पार्टी के शोरगुल से और अपनी पत्नी व बच्चों के इस आधुनिक व्यवहार से बचने के लिए वे संध्या पूजन (पूजा) के बहाने अपने कमरे में चले जाते हैं और जानबूझकर सामान्य से अधिक समय तक आँखें बंद करके ध्यान में बैठे रहते हैं।
- पूजा में बैठे-बैठे वे अपने आदर्श **किशनदा** का ध्यान करते हैं, जो उन्हें सपने में आकर कहते हैं- "जो हुआ होगा से आप मरोगे, भाऊ!"; यहाँ किशनदा की मृत्यु का असली कारण उनका अपना कोई परिवार न होना और सेवानिवृत्ति के बाद अकेलेपन और उपेक्षा का शिकार होना था।
- पार्टी के अंत में जब सभी मेहमान चले जाते हैं, तब उनका बड़ा बेटा भूषण उन्हें एक पैकेट खोलकर ऊनी **'ड्रेसिंग गाउन'** उपहार में देता है।
- उपहार देते समय बेटे का यह वाक्य उन्हें भीतर तक गहरा दर्द दे जाता है- "दूध लेने जाते समय आप फटा हुआ पुलोवर पहनते हैं, जो बहुत बुरा लगता है, कल से आप इसे पहनकर जाया कीजिए।"
- **यशोधर बाबू** को इस बात की सबसे गहरी चोट पहुँचती है कि उनका जवान बेटा यह नहीं कहता कि "पिताजी, अब आप आराम करें, कल से सुबह दूध मैं ले आया करूँगा", बल्कि वह पिता से ही यह काम करवाना चाहता है, बस उसका रूप और लिबास **'स्टैंडर्ड'** (आधुनिक) होना चाहिए।

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

- *कहानी के अंत में यशोधर बाबू बेमन से उस ऊनी ड्रेसिंग गाउन को पहनते हैं, जिसे पहनकर उन्हें अपनी आँखों के सामने किशनदा की छवि दिखाई देती है और वे खुद को किशनदा जैसा ही लाचार और अकेला महसूस करते हैं।*
- *उनकी आँखों की कोर में नमी (आँसू) आ जाती है, क्योंकि वे मजबूरी में अपने परिवार और **आधुनिकता** के साथ समझौता तो कर रहे हैं, पर मन से वे आज भी अपने अतीत, अपने संस्कारों और **किशनदा** की दी हुई पुरानी परंपराओं में ही जीना चाहते हैं।*

निष्कर्ष

*इस कहानी के माध्यम से लेखक ने **आधुनिकता** और परंपरा के टकराव को दर्शाते हुए यह स्पष्ट किया है कि भौतिक विकास की दौड़ में मानवीय मूल्य, पारिवारिक संबंध और बुजुर्गों का सम्मान कमजोर पड़ते जा रहे हैं, जिससे व्यक्ति भावनात्मक रूप से अकेला और उपेक्षित महसूस करता है।*

Theme

- ***पीढ़ी का अंतराल (Generation Gap):** नई **पीढ़ी** (पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित) और पुरानी पीढ़ी (परंपरावादी) के बीच की वैचारिक टकराहट और संघर्ष।*
- ***हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य:** **आधुनिकता** और भौतिकवाद की दौड़ में संयुक्त परिवार, बड़ों का सम्मान और आत्मीयता जैसे मूल्यों का पतन।*
- ***अकेलापन और उपेक्षा (Loneliness):** आधुनिक परिवार में बुजुर्गों की बढ़ती उपेक्षा और भावनात्मक दूरी।*
- ***द्वंद्व: यशोधर बाबू का अंतर्द्वंद्व**—उन्हें नई चीजें आकर्षक तो लगती हैं (जैसे फ्रिज, गैस), लेकिन उनका परंपरावादी मन उन्हें पूरी तरह स्वीकार नहीं कर पाता।*

यह सैंपल प्रति है। पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

2 शब्द-शक्ति

शब्द-शक्ति : परिभाषा: शब्द के अर्थ की जिस माध्यम से ग्रहण किया जाता है, वह माध्यम 'शब्द शक्ति' कहलाता है।

अथवा: अभीष्ट अर्थ श्रोता तक पहुँचाने की क्षमता अथवा शब्द में छिपे हुए तात्पर्य को प्रसंगानुसार स्पष्ट करने की शक्ति को शब्द-शक्ति कहते हैं।

उदा. — 'रमेश की गाय 5 किलो दूध देती है।' 'सीता तो निरी गाय है।' इन दोनों वाक्यों में 'गाय' शब्द आया है पर अर्थ भिन्न हैं। एक वाक्य में पशु का नाम है तो दूसरे में भोली, सीधी, सरल स्वभाव वाली है।

शब्द-शक्तियाँ — प्रकार

शब्द के उपयुक्त विज्ञापन के आधार पर शब्द की क्रमशः तीन शक्तियाँ मानी गई हैं:

क्र.	शब्द-शक्ति	अर्थ	शब्द का नाम
1.	अभिधा शब्द-शक्ति	वाचक	वाच्यार्थ / मुख्यार्थ
2.	लक्षणा शब्द-शक्ति	लक्षक	लक्ष्यार्थ
3.	व्यंजना शब्द-शक्ति	व्यंजक	व्यंग्यार्थ

(1) अभिधा शब्द-शक्ति : वाच्यार्थ (मुख्यार्थ) का बोध कराने वाली शक्ति को अभिधा कहते हैं — इसका संबंध शब्द का एक ही अर्थ ग्रहण करने से है।

— अथवा —

शब्द की जिस शक्ति से किसी शब्द के सबसे साधारण लोक-प्रचलित अथवा मुख्य अर्थ का बोध हो उसे 'अभिधा शक्ति' कहते हैं। इसे 'आद्या' या 'प्रथमा शक्ति' भी कहते हैं।

उदा. — (1) किसान फसल काट रहा है।
(2) जयपुर राजस्थान की राजधानी है।

(2) लक्षणा शब्द-शक्ति : जब किसी शब्द के मुख्यार्थ में बाधा हो तब अन्य अर्थ किसी लक्षण पर अथवा रूढ़ि काल से माने जा रहे रूढ़ अर्थ पर आधारित हो तो लक्षणा शब्द-शक्ति होती है।

इसके दो भेद हैं:

- रूढ़ा लक्षणा: जब किसी वाक्य में रूढ़ि (परम्परा) को आधार बनाकर लक्षणा शक्ति का प्रयोग किया जाता है तो वहाँ रूढ़ा लक्षणा मानी जाती है।

उदा. — (1) वह हवा से बात कर रहा था।
(2) सैनिकों ने कमर कस ली है।
(3) पुलिस देखकर चोर चौंकन्ना हो गया।
(4) भारत जाग उठा।

यह सैंपल प्रति है। पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

- *प्रयोजनवती लक्षणा: जहाँ किसी विशेष प्रयोजन से प्रेरित होकर शब्द का प्रयोग लक्ष्यार्थ में किया जाता है तो वहाँ प्रयोजनवती लक्षणा मानी जाती है।*

उदा. — (1) हम तो गंगावासी हैं।

(2) आओ मेरे शेर।

(3) यह राजमहल कब पूरा होगा।

***(3) व्यंजना शब्द-शक्ति : अर्थ :** विकसित करना / स्पष्ट करना / अर्थ करना।*

अतः किसी शब्द का छुपा हुआ अन्य अर्थ ज्ञात करना ही व्यंजना शब्द-शक्ति कहलाती है।

नोट: *जहाँ पर किसी वाक्य या शब्द का अलग-अलग अर्थ व्यक्ति के द्वारा अलग-अलग समझा जाये या श्रोता या पाठक अपनी कल्पना शक्ति से कोई अन्य अर्थ ग्रहण करती है, तो वहाँ व्यंजना शब्द-शक्ति होती है।*

जैसे—

(i) "चपरासी" ने प्रधानाध्यापक से कहा — "आज छुट्टी दे दी गई।"

(ii) "पुजारी" ने कहा — "अरे! सन्ध्या हो गई।

व्यंजना शब्द-शक्ति के दो भेद हैं—

1. *शाब्दी व्यंजना: जब अर्थ किसी शब्द पर निर्भर हो और उसके स्थान पर दूसरा शब्द रखने से अर्थ बदल जाता है, तो वहाँ शाब्दी व्यंजना होती है।*

उदाहरण—

(i) "रहमान पानी गए न?"

(ii) "सुरजन को ढूँढत फिरत..."

2. *आर्थी व्यंजना: जब शब्द का अर्थ पर निर्भर रहता है तो वहाँ आर्थी व्यंजना-शक्ति होती है।*

उदाहरण—

(i) "सूरज डूबने वाला है।"

(ii) "मनहूस हो गई आज अँधेरी, या घटना के तेरी।"

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

3 अलंकार

अलंकार : अलंकार शब्द का सामान्य अर्थ आभूषण या गहना है। आभूषण जिस प्रकार शरीर की शोभा बढ़ाने के लिए धारण किए जाते हैं, उसी प्रकार काव्य की शोभा बढ़ाने के लिए अलंकार प्रयोग किए जाते हैं। काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्व को ही अलंकार कहते हैं।

संस्कृत से — 'अलंकरोति इति अलंकारः।' जो अलंकृत या भूषित करे उसे ही अलंकार कहते हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार: "भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप, गुण और क्रिया का अधिक तीव्र अनुभव कराने में कभी-कभी सहायक होने वाली उक्ति अलंकार है।"

अलंकार के भेद : मुख्य रूप से दो भेद होते हैं

- **शब्दालंकार:** जहाँ चमत्कार कविता में प्रयुक्त शब्द पर आधारित होता है वहाँ शब्दालंकार होता है। यदि प्रयुक्त शब्दों को हटाकर उनका कोई पर्यायवाची रख दिया जाए तो चमत्कार समाप्त हो जाता है। अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि शब्दालंकार के उदाहरण हैं।
- **अर्थालंकार:** जहाँ कविता का चमत्कार उसके शब्द के स्थान पर अर्थ में निहित हो तो वहाँ अर्थालंकार होता है। यहाँ पर्यायवाची शब्द रख देने पर भी चमत्कार बना रहता है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, उदाहरण, विरोधाभास आदि अर्थालंकार के उदाहरण हैं।

इसके अतिरिक्त उभयालंकार भी अलंकार का भेद माना जाता है

- **उभयालंकार:** जहाँ अलंकार का चमत्कार उसके शब्द और अर्थ दोनों में पाया जाए तो वहाँ उभयालंकार होता है।

शब्दालंकार — विस्तार

(1) अनुप्रास अलंकार : जहाँ काव्य-पंक्ति में वर्णों की आवृत्ति एक से अधिक बार हो, चाहे उसमें स्वरों की समानता हो या विषमता, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। [काव्य में लय सौंदर्य उत्पन्न हो]

अनुप्रास

पहचान — किसी एक व्यंजन वर्ण की पंक्ति में बार-बार आवृत्ति हो और सुनने में लय/संगीत बन जाए।

"चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रहीं थीं जल-थल में।"

→ **वर्ण 'च' की आवृत्ति**

"तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।"

→ **वर्ण 'त' की आवृत्ति**

"रघुपति राघव राजा राम।"

→ **वर्ण 'र' की आवृत्ति**

"कल कानन कुंडल मोर-पखा।"

यह सैंपल प्रति है। पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

→ **वर्ण 'क' की आवृत्ति**

Tricks

अनुप्रास के मुख्यतः 5 भेद होते हैं:

- **छेकानुप्रास**: इस भेद में एक या एक से अधिक वर्णों की आवृत्ति केवल एक बार ही होती है।

उदा. — कानन, कठिन, भयंकर, भारी — इस पंक्ति में 'क' और 'भ' वर्ण केवल दो-दो बार आए हैं। अतः यहाँ छेकानुप्रास अलंकार है।

- **वृत्यनुप्रास**: जहाँ एक या अनेक वर्णों की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है तो वहाँ वृत्यनुप्रास अलंकार होता है।

उदा. — विरक्त, विवेक, विमल, विज्ञानी — इस पंक्ति में 'व' वर्ण की आवृत्ति अनेक बार हुई है।

- **श्रुत्यनुप्रास**: जहाँ ऐसे वर्णों की आवृत्ति हो जो मुख के एक ही उच्चारण-स्थान से उच्चरित हों, वहाँ श्रुत्यनुप्रास अलंकार होता है।

उदा. — दिनान्त था, धीरे दिनकर डूबने — इस पंक्ति में एक ही उच्चारण-स्थान 'दंत' से उच्चरित होने वाले अनेक वर्णों की आवृत्ति हुई है। अतः यहाँ श्रुत्यनुप्रास अलंकार है।

- **अन्त्यानुप्रास**: जब छन्द की प्रत्येक पंक्ति के अंतिम वर्ण में समान इकाई या मात्राओं की आवृत्ति के कारण तुकांत मिलती है तो वहाँ अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है।

उदा. — रघुकुल रीत सदा चली आई। प्राण जाए पर वचन न जाई।।

- **लाटानुप्रास अलंकार** : जब किसी शब्द या वाक्यांश की आवृत्ति उसी अर्थ में हो परंतु तात्पर्य अन्वय में भिन्नता होती है तो वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है। इस अलंकार में शब्दों की आवृत्ति तो समान होती है परंतु उनका अर्थ या भाव भिन्न होता है।

उदा. — पूत सपूत तो क्यों धन संचे। पूत कपूत तो क्यों धन संचे।।

(2) यमक अलंकार : जहाँ एक या एक से अधिक शब्दों की आवृत्ति हो किन्तु उनके अर्थ भिन्न-भिन्न हों, वहाँ यमक अलंकार होता है।

उदा. — काली घटा का घमंड घटा — 'घटा' शब्द दो बार आया है। पहली 'घटा' का अर्थ बादल है तथा दूसरी 'घटा' का अर्थ 'कम हुआ' है।

उदा. — कनक कनक ते सौं गुनी, मादकता अधिकाय। वा खाए बौराय जग, या पाए बौराय।। —
कनक = धतूरा / सोना

यमक

पहचान — एक ही शब्द दो या अधिक बार दोहराया जाए, पर हर बार अर्थ अलग। (शब्द दोहराता है — यही श्लेष से फ़र्क।)

"कनक कनक ते सौं गुनी, मादकता अधिकाय।"

→ **पहला कनक = धतूरा · दूसरा कनक = सोना**

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

"काली घटा का घमंड घटा।"

→ **पहला घटा = बादल · दूसरा घटा = कम हुआ**

"तीन बेर खाती थीं, वे तीन बेर खाती हैं।"

→ **पहला बेर = बार (times) · दूसरा बेर = बेर फल**

Tricks

(3) श्लेष अलंकार : *श्लेष का अर्थ है — चिपकना। काव्य में जहाँ एक ही शब्द के एक से अधिक अर्थ प्रकट होकर चमत्कार की अनुभूति करवाते हैं, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।*

उदा. — रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून। पानी गये न ऊबरे, मोती, मानुष, चून।। — 'पानी' के अनेक अर्थ: मोती के संदर्भ में 'चमक', मनुष्य के संदर्भ में 'इज़्ज़त' और चून के संदर्भ में 'जल'।

उदा. — मंगन को देखि पट देत बार-बार हैं। — 'पट' शब्द के दो अर्थ: दरवाज़ा और वस्त्र।

श्लेष

पहचान — *एक ही शब्द सिर्फ़ एक बार आए, पर उसके दो या अधिक अर्थ एक साथ खुलें। (शब्द दोहराता नहीं — यही यमक से फ़र्क।)*

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।"

→ **पानी = चमक · लाज · जल (एक ही शब्द, कई अर्थ)**

"जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय। बारे उजियारो करै, बढ़े अँधेरो होय।"

→ **बारे = बचपन / जलाने पर · बढ़े = बड़े होने पर / बुझने पर**

"सुबरन को ढूँढत फिरत, कवि, व्यभिचारी, चोर"

→ **सुबरन = सुंदर वर्ण/अक्षर (कवि) · सुंदर रूप (कामी) · सोना (चोर)**

Tricks

(4) वक्रोक्ति अलंकार: *वक्रोक्ति शब्द 'वक्र' तथा 'उक्ति' से मिलकर बना है, इसका अर्थ है — टेढ़ी उक्ति/टेढ़ा कथन। जहाँ पर वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का श्रोता अलग अर्थ निकालता है तो उसे वक्रोक्ति अलंकार कहते हैं।*

अथवा: कहने वाले का अर्थ कुछ और होता है लेकिन सुनने वाला उससे कोई दूसरा ही अर्थ निकाल लेता है तो वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।

उदा. — कौन द्वार पर खड़े हिरे में। क्यों बानर का काम यहाँ है?
उदा. — कौन तुम में धनश्याम। तो बरसी किन आये।।

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

वक्रोक्ति

पहचान — वक्ता कुछ कहे, श्रोता उसे मोड़कर **दूसरा ही अर्थ** पकड़े/ ग्रहण करें — या तो श्लेष से, या काकु (बोलने के स्वर) से।

कृष्ण कहते हैं — "मैं **घनश्याम** हूँ।" गोपी मोड़ देती हैं:

"को तुम हौ इत आए कहाँ, **घनश्याम** हौ तौ कितहूँ बरसो।"

→ श्लेष वक्रोक्ति · **घनश्याम** (कृष्ण) को 'बादल' मानकर — "तो कहीं और बरसो!"

कृष्ण — "मैं तो **चितचोर** कहलाता हूँ।" गोपी:

"**चितचोर** कहावत हैं हम तौ, तहँ जाहु जहाँ धन सरसो।"

→ श्लेष वक्रोक्ति · **चित्त-चोर** को सीधा 'चोर' मानकर — "तो जहाँ धन हो वहाँ जाओ।"

"वाह! तुम तो बड़े **वीर** निकले!" — (व्यंग्य-भरे **स्वर** में)

→ काकु वक्रोक्ति · स्वर से उल्टा अर्थ — असल में 'कायर'

Tricks

अर्थालंकार — विस्तार

(5) विरोधाभास अलंकार : विरोधाभास शब्द 'विरोध' तथा 'आभास' के योग से बना है। अर्थात् जब किसी पद में वास्तविकता में तो विरोध वाली कोई बात नहीं होती है परंतु सामान्य बुद्धि से विचार करने पर विरोध का आभास होता है।

उदा. — या अब झमरित की, गति सुलझी कौन कोय। ज्यौं-ज्यों बूड़े स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जवल होय।

उदा. — तंत्री-नाद कवित्त-रस, सरस राग रति रंग। अनबूड़े बूड़े तिरे जो बूड़े सब अंग।।

विरोधाभास

पहचान — बात पहले **विरोधी/असंभव** लगे — "ऐसा कैसे?" — फिर सोचने पर सही अर्थ निकल आए। विरोध सिर्फ़ ऊपरी होता है।

"अनबूड़े **बूड़े**, **तरे** जे बूड़े सब अंग।"

→ जो **न डूबा** वह डूब गया, जो **पूरा डूबा** वह तर गया — रस में डूबना = पार होना

"ज्यों-ज्यों **बूड़ै** स्याम रंग, त्यों-त्यों **उज्वल** होय।"

→ डूबने पर उजला होना विरोध लगता है — प्रेम-रंग में डूबना ही निर्मल होना

"उसका **मौन** ही सबसे अधिक **मुखर** था।"

→ मौन और मुखर एक साथ — चुप्पी का बहुत कुछ कह जाना

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

"राणा ने सोचा **इस पार**, तब तक चेतक था **उस पार**।"

→ सोचने से पहले ही घोड़ा नदी पार — असंभव वेग

"बहे आँसू ऐसे कि **नदी ही बन गई**।"

→ दुख को अत्यधिक बढ़ा-चढ़ाकर कहना

(8) भ्रांतिमान अलंकार : जब किसी वस्तु या पदार्थ के समान गुण, रंग, रूप आदि के कारण वास्तविक वस्तु में कोई अन्य वस्तु मान ली जाती है अर्थात् उपमेय में उपमान का भ्रम हो जाता है तो वहाँ भ्रांतिमान अलंकार माना जाता है।

उदा. — ओस बिंदु युत घास हँसिनी मोती उनकी जान — हँसिनी के द्वारा ओस की बूंदों को भ्रम से मोती समझ कर चुगना भ्रांति का भाव उत्पन्न कर रहा है। इसलिए यहाँ भ्रांतिमान अलंकार है।

उदा. — सुंदर श्याम की श्यामधन नाच उठे वन मोर — मोर के द्वारा कृष्ण को काला बादल समझकर नाच उठना भ्रांति का भाव उत्पन्न कर रहा है। इसलिए यहाँ भ्रांतिमान अलंकार माना जाएगा।

भ्रांतिमान्

पहचान — एक चीज़ को दूसरी **समझ ही बैठे** — पक्का पर गलत निश्चय, और अक्सर उस भ्रम पर क्रिया भी। (संदेह में शक रहता है; यहाँ 'यही है' मान लिया।)

"नाक का मोती अधर की कांति से, बीज दाड़िम का **समझकर** भ्रांति से..."

→ तोता नाक के मोती को **अनार का दाना** समझ बैठा

"पायँ महावर देन को नाइन बैठी आय। फिरि-फिरि **जानि महावरी**, एड़ी मीड़ति जाय।"

→ एड़ी की स्वाभाविक लाली को **महावर** समझ बार-बार पोंछती है

"घन **समझ** नाचने लगा मोर।"

→ चाँदनी/चाँद को **घटा** समझकर मोर नाच उठा

चाबी सिर्फ़ पहचान के लिए है — **असली दम** उदाहरण याद करने में है। पंक्ति देखो, चाबी लगाओ, अलंकार पकड़ो।

(9) सन्देह अलंकार : जब किसी पद में रंग, रूप, गुण आदि की समानता देखकर उस वस्तु या पदार्थ में यह निश्चय नहीं हो पाता कि संबंधित वस्तु क्या है, अर्थात् उपमेय और उपमान की समानता के कारण पद में अंत तक सन्देह की स्थिति बनी रहती है और निश्चय नहीं हो पाता कि संबंधित वस्तु क्या है, तो वहाँ सन्देह अलंकार माना जाता है।

सन्देह अलंकार के पदों में उपमेय या उपमान के बीच 'कि', 'किंवा', 'अथवा', 'या', 'वा' आदि शब्दों का प्रयोग कर दिया जाता है।

उदा. — ये हैं सरस ओस की बूंदें या फिर मुझल मोती — यहाँ पर निश्चय नहीं हो पा रहा कि वर्णित वस्तु ओस की बूंदें हैं या मोती। अतः यहाँ सन्देह अलंकार माना जाएगा।

यह सैंपल प्रति है। पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली

प्रशासन और कार्यालय

अंग्रेज़ी शब्द	हिंदी पर्याय	अंग्रेज़ी शब्द	हिंदी पर्याय
Administration	प्रशासन	Notification	अधिसूचना
Allowance	भत्ता	Pension	निवृत्ति-वेतन
Appointment	नियुक्ति	Promotion	पदोन्नति
Application	आवेदन	Reminder	अनुस्मारक
Authority	प्राधिकारी	Resignation	त्यागपत्र
Circular	परिपत्र	Retirement	सेवानिवृत्ति
Clerk	लिपिक	Salary	वेतन
Confidential	गोपनीय	Secretary	सचिव
Department	विभाग	Tender	निविदा
Draft	मसौदा	Transfer	स्थानांतरण
Enclosure	संलग्नक	Vacancy	रिक्ति
Memorandum	ज्ञापन	Despatch	प्रेषण

विधि और न्याय

अंग्रेज़ी शब्द	हिंदी पर्याय	अंग्रेज़ी शब्द	हिंदी पर्याय
Act	अधिनियम	Judgement	निर्णय
Affidavit	शपथ-पत्र	Jurisdiction	क्षेत्राधिकार
Amendment	संशोधन	Legislature	विधान-मंडल
Appeal	अपील	Notice	सूचना
Arrest	गिरफ़्तारी	Ordinance	अध्यादेश
Bail	ज़मानत	Petition	याचिका
Bill	विधेयक	Plaintiff	वादी
Constitution	संविधान	Rule	नियम
Court	न्यायालय	Warrant	वारंट
Defendant	प्रतिवादी	Witness	गवाह
Evidence	साक्ष्य	Verdict	निर्णय / फ़ैसला

यह सैंपल प्रति है। पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

निविदा सूचना

(Tender Notice)

- **पहचान :** सामान खरीदने, बेचने या निर्माण कार्य के लिए ठेकेदारों को आमंत्रण।
- **क्रमांक :** पत्रावली क्रमांक अवश्य लिखें (बाएँ पक्ष में)।
- **फिक्स्ड लाइन :** "निम्नलिखित सामग्री आपूर्ति/कार्य हेतु प्रतिष्ठित फर्मों/ठेकेदारों से मुहरबंद निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं।"
- **सारणी (Table) :** इसमें क्र.सं., विवरण, अनुमानित लागत, धरोहर राशि और समय के कॉलम अनिवार्य हैं।
- **शर्तें :** नीचे 2-3 शर्तें जरूर लिखें (जैसे: धरोहर राशि के बिना निविदा मान्य नहीं होगी)।

प्रारूप

[विभाग का नाम - जैसे: राजस्थान सरकार]

[कार्यालय का नाम व पता - जैसे: कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, जयपुर]

क्रमांक: कार्यालय का कोड(Ex जि. शि. अ)**/निविदा/2026/संख्या**(Random) **दिनांक:** _____

निविदा सूचना

अधोहस्ताक्षरकर्ता द्वारा **[कार्य का नाम, जैसे: भवन निर्माण/सामग्री आपूर्ति]** हेतु प्रतिष्ठित एवं अनुभवी फर्मों/पंजीकृत ठेकेदारों से मोहरबन्द निविदाएँ आमन्त्रित की जाती हैं। निविदाएँ दिनांक **[अन्तिम तिथि]** को दोपहर **[समय, जैसे: 2:00]** बजे तक स्वीकार की जाएँगी तथा उसी दिन अपराह्न **[समय, जैसे: 3:00]** बजे उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोली जाएँगी।

निविदा का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत	धरोहर राशि	अवधि
1.	**[कार्य का नाम A]**	------	/-	--
2.	**[कार्य का नाम B]**	------	/-	--

शर्तें:

1. निविदा प्रपत्र कार्यालय समय में निर्धारित शुल्क जमा कराकर प्राप्त किए जा सकते हैं.
2. बिना धरोहर राशि के निविदा मान्य नहीं होगी.
3. अधोहस्ताक्षरकर्ता को बिना कारण बताए निविदा स्वीकार/अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार होगा.
4. अन्य विस्तृत जानकारी विभाग की वेबसाइट [Website URL] पर देखी जा सकती है.

(हस्ताक्षर)

[पद का नाम - जैसे: जिला शिक्षा अधिकारी]

[स्थान]

यह सैंपल प्रति है। पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

विज्ञप्ति

(Notification/Communiqué)

- **पहचान :** किसी निर्णय, घोषणा, निर्देश या योजना को सार्वजनिक करना।
- **शीर्षक :** मध्य में "विज्ञप्ति" और उसके नीचे कोष्ठक में विषय (जैसे: आम सूचना)।
- **फिक्स्ड लाइन :** "सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि..." या "समस्त नागरिकों से अपील की जाती है कि..."
- **मुख्य बात :** यदि परीक्षाओं या स्थान में बदलाव है, तो पुरानी और नई जानकारी स्पष्ट लिखें।
- **हस्ताक्षर :** अंत में दाईं ओर सक्षम अधिकारी का पद और नाम।

प्रारूप

[विभाग का नाम - जैसे: माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर]

क्रमांक: ***[विभाग]/विज्ञप्ति/2026/[संख्या]*** ***दिनांक:*** ***[आज की तारीख]***

विज्ञप्ति

विषय: ***[जिस बारे में सूचना देनी है]***

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि..." या "प्रदेश के समस्त नागरिकों/विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि... ***[मुख्य सूचना का विवरण - जैसे: परीक्षा तिथि/अवकाश/नियम में बदलाव]***।
अतः सभी संबंधितों से अनुरोध है कि उपर्युक्त निर्देशों का पालन सुनिश्चित करें। इस संबंध में विस्तृत जानकारी विभाग की आधिकारिक वेबसाइट ***[वेबसाइट का नाम - जैसे: boardzone.in]*** पर उपलब्ध है.

(हस्ताक्षर)
[पद का नाम - जैसे: सचिव/निदेशक]
[संस्था का नाम]

प्रश्न — माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, उत्तरप्रदेश द्वारा पाठ्य पुस्तक विक्रेताओं को बोर्ड कार्यालय, इलाहाबाद में पंजीयन करवाने हेतु विज्ञप्ति लिखिए।

उत्तर

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

क्रमांक: मा.शि.बो.उ.प्र./पंजी./2026/842 ***दिनांक:*** 25 मार्च, 2026

विज्ञप्ति

विषय: पुस्तक विक्रेताओं के पंजीयन हेतु

उत्तर प्रदेश प्रदेश के समस्त पुस्तक विक्रेताओं को एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित एवं अधिकृत पाठ्य-पुस्तकों का शैक्षणिक सत्र 2026-27 हेतु विक्रय करने के लिए बोर्ड कार्यालय में पंजीयन (Registration) कराना अनिवार्य है ।

पंजीयन संबंधी मुख्य विवरण निम्नवत् है:

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

अर्द्ध-शासकीय पत्र

(Demi-Official Letter)

- **पहचान :** दो अधिकारियों के बीच व्यक्तिगत नाम से सूचना या विचार-विमर्श हेतु पत्राचार।
- **शैली :** यह उत्तम पुरुष (I/Me) में और आत्मीयता के साथ लिखा जाता है।
- **सम्बोधन :** 'महोदय' के स्थान पर "प्रिय श्री [नाम] जी" का प्रयोग करें।
- **फिक्स्ड लाइन :** "मुझे आपका व्यक्तिगत ध्यान इस विषय की ओर आकर्षित करना है कि..."
- **प्रेषिति :** प्राप्तकर्ता का नाम और पता पत्र के अंत में बाईं ओर लिखें।

प्रारूप

राजस्थान सरकार
आयोजना विभाग, जयपुर

क ख ग (I.A.S.) **दिनांकः** _____
शासन सचिव **अर्द्ध-शासकीय पत्र क्र.:** 205
प्रिय श्री शर्मा जी,

मुझे आपका व्यक्तिगत ध्यान इस विषय की ओर आकर्षित करना है कि **[विषयः जैसे- बजट स्वीकृति / परीक्षा सुरक्षा]** का कार्य अभी तक लंबित है।

अतः आपसे अनुरोध है कि आप इस मामले में स्वयं रुचि लेकर संबंधित अधिकारियों को उचित निर्देश प्रदान करें, ताकि यह कार्य समय सीमा में पूर्ण हो सके।

शुभकामनाओं सहित,
आपका सद्भावी,
(क ख ग)

सेवा में,
श्री आर. के. शर्मा,
निदेशक,
चिकित्सा विभाग, जयपुर

प्रश्न — स्वयं को शासन सचिव, शिक्षा विभाग रविकुमार मानते हुए राज्य के समस्त संस्था प्रधानों को 'गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा' की सुनिश्चितता हेतु एक अर्द्ध शासकीय पत्र का प्रारूप लिखिए।

उत्तर

राजस्थान सरकार
शिक्षा विभाग, शासन सचिवालय, जयपुर

रविकुमार **दिनांक :25 मार्च, 2026**
शासन सचिव **पत्र क्र.:** शि.वि./गुण.शि./2026/115
प्रिय संस्था प्रधान जी,

यह सैंपल प्रति है। पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

निबंध कैसे लिखें

(निबंध-लेखन की विधि)

निबंध लिखने से पहले

- दिए गए विषयों में से वही चुनें जिसके तथ्य और बिंदु सबसे अधिक याद हों। रफ़ कार्य में दो मिनट में रूपरेखा बनाएँ — **प्रस्तावना → चार मुख्य बिंदु → उपसंहार**।
- हर मुख्य बिंदु का एक छोटा शीर्षक रखें। 250 से 300 शब्दों में कुल **5 से 6 शीर्षक** पर्याप्त होते हैं।

प्रस्तावना कैसे लिखें

- प्रस्तावना **चार-पाँच पंक्तियों** (लगभग 40 से 50 शब्द) की हो और सीधे विषय से शुरू हो। पूरा विषय प्रस्तावना में ही न निपटाएँ।
- आरंभ के पाँच तरीके — **सूक्ति या दोहा, परिभाषा, प्रश्न, तथ्य, महापुरुष का कथन**। अंत में एक वाक्य आगे के विवेचन की ओर संकेत करे।

सूक्ति और उद्धरण का प्रयोग

- सूक्ति प्रायः **प्रस्तावना की पहली पंक्ति** में या **उपसंहार की अंतिम पंक्ति** में रखें। पूरे निबंध में एक या दो सूक्तियाँ काफ़ी हैं।
- वही पंक्ति लिखें जो शुद्ध रूप में याद हो। उसे उद्धरण चिह्नों में रखें और उसके बाद एक वाक्य में उसका भाव विषय से जोड़ दें।

विषय	उपयोगी सूक्ति / पंक्ति
जल-संरक्षण	"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।" — रहीम
स्वच्छता	"स्वच्छता में ही ईश्वर का वास होता है।"
बेटी / नारी-सम्मान	"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।" — मनुस्मृति
राष्ट्रीय एकता	"संगठन में शक्ति है।" / "अनेकता में एकता।"
किसान	"जय जवान, जय किसान।" — लाल बहादुर शास्त्री
जनसंख्या	"छोटा परिवार, सुखी परिवार।"
परिश्रम / शिक्षा	"उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।" — हितोपदेश

मध्य भाग के तीन-चार बिंदु

- क्रम रखें — **अर्थ या स्वरूप → महत्त्व या कारण → समस्याएँ या दुष्परिणाम → सरकारी प्रयास और उपाय**।

यह सैंपल प्रति है। पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

निबंध 1 स्वच्छ भारत अभियान

स्वच्छता का महत्त्व

प्रस्तावना

"स्वच्छता में ही ईश्वर का वास होता है।" *यह कथन बताता है कि साफ़-सुथरा वातावरण केवल सुंदरता का नहीं, स्वास्थ्य और संस्कार का भी आधार है। जहाँ गंदगी होती है, वहाँ बीमारियाँ पनपती हैं और जहाँ स्वच्छता होती है, वहाँ सुख-समृद्धि निवास करती है। इसी भावना को राष्ट्रीय आंदोलन बनाने के लिए सरकार ने 'स्वच्छ भारत अभियान' आरंभ किया। यह अभियान देशवासियों को स्वच्छता के प्रति उनके कर्तव्य का स्मरण कराता है।*

स्वच्छता का अर्थ और महत्त्व

स्वच्छता का अर्थ केवल घर-आँगन की सफ़ाई नहीं, बल्कि तन, मन और परिवेश की शुद्धता है। स्वच्छ वातावरण में रहने वाला व्यक्ति स्वस्थ रहता है, उसकी कार्यक्षमता बढ़ती है और इलाज पर होने वाला खर्च घटता है। साफ़ गाँव और शहर लोगों का सम्मान भी बढ़ाते हैं। स्वच्छता से मन में प्रसन्नता और आत्मविश्वास भी बना रहता है।

अभियान की शुरुआत

महात्मा गांधी स्वच्छता को स्वतंत्रता जितना ही आवश्यक मानते थे। उनके स्वप्न को साकार करने के लिए 2 अक्टूबर 2014 को गांधी जयंती पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वच्छ भारत अभियान का शुभारंभ किया। लक्ष्य रखा गया कि गांधीजी की 150वीं जयंती तक देश स्वच्छ बने।

अभियान के प्रमुख कार्य

अभियान के अंतर्गत घर-घर शौचालय बनाए गए, खुले में शौच की प्रथा रोकने पर बल दिया गया और कचरे के संग्रह तथा निस्तारण की व्यवस्था की गई। विद्यालयों में बालक-बालिकाओं के लिए अलग शौचालय बने। स्वच्छता सर्वेक्षण से नगरों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा भी पैदा हुई। जगह-जगह जागरूकता रैलियाँ और श्रमदान कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

चुनौतियाँ और हमारा योगदान

सार्वजनिक स्थानों पर कचरा फैलाने की आदत, प्लास्टिक का अंधाधुंध प्रयोग और जागरूकता की कमी आज भी बड़ी बाधाएँ हैं। हमें कचरा कूड़ेदान में ही डालना चाहिए, गीले-सूखे कचरे को अलग रखना चाहिए और प्लास्टिक का प्रयोग घटाकर मोहल्ले में सफ़ाई अभियान चलाने चाहिए।

उपसंहार

स्वच्छ भारत अभियान केवल सरकारी योजना नहीं, जन-आंदोलन है। जब प्रत्येक नागरिक स्वच्छता रखने का संकल्प लेगा, तभी गांधीजी का सपना पूरा होगा। स्वच्छ वातावरण ही स्वस्थ समाज की पहली शर्त है। ***स्वच्छता को आदत बनाकर ही हम अपने देश को स्वस्थ और सुंदर बना सकते हैं।***

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

निबंध 2 डिजिटल इंडिया

डिजिटल भारत की ओर बढ़ते कदम

प्रस्तावना

"ज्ञान ही शक्ति है" *और आज के युग में ज्ञान तथा सूचना का सबसे तेज़ साधन तकनीक है। जो देश तकनीक में आगे है, वही विकास की दौड़ में आगे है। भारत को भी तकनीक से जोड़कर सशक्त बनाने के लिए सरकार ने 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम आरंभ किया। यह कार्यक्रम देश को ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।*

डिजिटल इंडिया का अर्थ और शुभारंभ

डिजिटल इंडिया का अर्थ है सरकारी सेवाओं को इंटरनेट और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से आम नागरिक तक पहुँचाना। इस कार्यक्रम का शुभारंभ 1 जुलाई 2015 को हुआ। इसके तीन मुख्य उद्देश्य हैं — हर नागरिक को डिजिटल सुविधा, माँग पर सरकारी सेवाएँ और नागरिकों का डिजिटल सशक्तीकरण। इसका उद्देश्य शहर और गाँव के बीच की डिजिटल दूरी को कम करना भी है।

प्रमुख पहलें

इस कार्यक्रम के अंतर्गत डिजिलॉकर, यूपीआई, भीम ऐप, ई-साइन और कॉमन सर्विस सेंटर जैसी सुविधाएँ शुरू हुईं। गाँवों में ब्रॉडबैंड पहुँचाने के लिए भारतनेट परियोजना चलाई गई। अब बिजली का बिल, फ़ीस और टिकट जैसे काम मोबाइल से कुछ ही क्षणों में हो जाते हैं। इससे लंबी कतारों में लगने की परेशानी काफ़ी कम हुई है।

डिजिटल इंडिया के लाभ

डिजिटल सेवाओं से समय और धन की बचत हुई है। सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे बैंक खाते में पहुँचने से भ्रष्टाचार घटा है और पारदर्शिता बढ़ी है। ऑनलाइन शिक्षा, ई-कॉमर्स और घर बैठे रोज़गार के नए अवसर भी मिले हैं। छोटे दुकानदार भी अब डिजिटल भुगतान से अपना व्यापार बढ़ा रहे हैं।

चुनौतियाँ

ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की कमज़ोर पहुँच, डिजिटल साक्षरता का अभाव और ऑनलाइन धोखाधड़ी जैसे साइबर अपराध बड़ी चुनौतियाँ हैं। इनसे निपटने के लिए नागरिकों को डिजिटल रूप से साक्षर बनाना और डेटा की सुरक्षा के कठोर उपाय करना आवश्यक है। साथ ही गाँव-गाँव तक बिजली और इंटरनेट की सुविधा पहुँचाना भी ज़रूरी है।

उपसंहार

डिजिटल इंडिया नए भारत की नींव है। यदि हम तकनीक का प्रयोग सावधानी और सकारात्मक सोच से करें, तो यह देश को आत्मनिर्भर बनाने में बड़ी भूमिका निभाएगा। हमें डिजिटल साक्षरता अपनाकर इस अभियान का हिस्सा बनना चाहिए। ***तकनीक को साधन बनाइए, साध्य नहीं।***

निबंध 3 बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

बालिका शिक्षा और लिंगानुपात

प्रस्तावना

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।" *अर्थात जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। दुर्भाग्य से हमारे समाज में बेटियों को आज भी बोझ समझने की मानसिकता मिलती है। इसी सोच को बदलने के लिए 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान चलाया गया। यह अभियान बेटियों को समान अधिकार और सम्मान दिलाने का प्रयास है।*

घटता लिंगानुपात

कन्या-भ्रूण हत्या के कारण देश के अनेक भागों में बेटियों की संख्या घटती गई। 2011 की जनगणना में छह वर्ष तक के बच्चों में प्रति हज़ार बालकों पर केवल 918 बालिकाएँ थीं। यह असंतुलन समाज के भविष्य के लिए गंभीर चेतावनी है। यदि यह स्थिति बनी रही तो सामाजिक संतुलन बिगड़ सकता है।

बेटियों की उपेक्षा के कारण

रूढ़िवादी सोच, दहेज प्रथा, पुत्र की चाह, अशिक्षा और बेटियों की सुरक्षा की चिंता इसके प्रमुख कारण हैं। अनेक परिवार मानते हैं कि बेटा बुढ़ापे का सहारा है और बेटी पराया धन, जबकि आज बेटियाँ शिक्षा, खेल, सेना और विज्ञान जैसे हर क्षेत्र में देश का नाम रोशन कर रही हैं। इसलिए बेटियों को बोझ समझना सबसे बड़ी भूल है।

अभियान और सरकारी प्रयास

इस अभियान का शुभारंभ 22 जनवरी 2015 को हरियाणा के पानीपत से हुआ। महिला एवं बाल विकास, स्वास्थ्य तथा शिक्षा मंत्रालय इसे मिलकर चलाते हैं। लिंग-परीक्षण पर कानूनी रोक है और बेटियों की पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति तथा सुकन्या समृद्धि जैसी योजनाएँ चलाई जा रही हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य समाज में बेटियों के प्रति सम्मान की भावना जगाना है।

हमारा कर्तव्य

हमें बेटा-बेटी में भेद करना छोड़ना होगा। बेटियों को पढ़ने, खेलने और आगे बढ़ने के समान अवसर देने चाहिए। दहेज जैसी कुप्रथाओं का विरोध करना और अपने आस-पास जागरूकता फैलाना हम सबका दायित्व है। समाज की सोच बदलने से ही बेटियों को सम्मान मिलेगा। हर परिवार को बेटी के जन्म का स्वागत उत्साह से करना चाहिए।

उपसंहार

*बेटी परिवार की ही नहीं, पूरे राष्ट्र की शक्ति है। **शिक्षित बेटी दो कुलों को रोशन करती है।** जब हर बेटी सुरक्षित और शिक्षित होगी, तभी भारत सही अर्थों में विकसित बनेगा। बेटियों के सशक्त होने से परिवार और समाज दोनों सशक्त होते हैं।*

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

निबंध 4 जल है तो जीवन है

जल संरक्षण और जल संकट

प्रस्तावना

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।" *रहीम का यह दोहा जल के महत्त्व को बहुत सरल ढंग से बताता है। जल के बिना न मनुष्य जीवित रह सकता है, न पशु-पक्षी और न वनस्पतियाँ। आज यही अमूल्य जल संकट के कगार पर है। इसलिए जल-संरक्षण आज समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गया है।*

जल का महत्त्व

जल पीने, खेती, उद्योग, बिजली-उत्पादन और स्वच्छता सभी के लिए आवश्यक है। पृथ्वी का अधिकांश भाग जल से ढका है, पर उसमें पीने योग्य मीठा जल बहुत थोड़ा है। इसीलिए जल को जीवन का आधार कहा गया है। जल के बिना सभ्यता और संस्कृति की कल्पना भी नहीं की जा सकती। प्राचीन सभ्यताएँ भी नदियों के किनारे ही विकसित हुई थीं।

जल-संकट के कारण

बढ़ती जनसंख्या, उद्योगों का फैलाव, भूजल का अंधाधुंध दोहन और वर्षा-जल का संचय न होना इसके मुख्य कारण हैं। नदियों-तालाबों में कचरा डालने से उपलब्ध जल भी प्रदूषित हो रहा है। राजस्थान जैसे मरुस्थलीय प्रदेश में वर्षा कम होने से समस्या और गंभीर है। बढ़ती गर्मी और घटते वनों ने भी जल-स्रोतों को सुखा दिया है।

दुष्परिणाम

जल की कमी से खेती चौपट होती है, पेयजल के लिए मीलों दूर जाना पड़ता है और महिलाओं-बच्चों का समय बर्बाद होता है। भूजल स्तर गिरने से कुएँ-नलकूप सूख जाते हैं। भविष्य में जल के लिए संघर्ष की आशंका भी जताई जाती है। गर्मियों में कई गाँवों को टैंकरों पर निर्भर रहना पड़ता है। जल की कमी से बीमारियाँ भी फैलती हैं, क्योंकि लोगों को दूषित पानी पीना पड़ता है।

जल-संरक्षण के उपाय

वर्षा-जल संचयन, पारंपरिक बावड़ियों, टाँकों और जोहड़ों का पुनर्जीवन तथा ड्रिप सिंचाई जैसे उपाय अपनाने चाहिए। सरकार ने राजस्थान में जल स्वावलंबन अभियान और देश में जल जीवन मिशन चलाए हैं। हमें नल खुला न छोड़कर और रिसते नल ठीक कराकर पानी की हर बूँद बचानी चाहिए। विद्यालयों और समाज में जल-बचत के प्रति जागरूकता फैलाना भी आवश्यक है।

उपसंहार

जल-संरक्षण केवल सरकार का नहीं, हर नागरिक का कर्तव्य है। यदि हम आज पानी बचाएँगे, तभी आने वाली पीढ़ियों को जीवन मिलेगा। हमें आज ही जल बचाने का दृढ़ संकल्प लेना होगा। ***जल है तो कल है।***

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

(प्रिंट · रेडियो · टेलीविज़न · इंटरनेट)

जनसंचार माध्यम और उनके लिए लेखन

- ***जनसंचार*** *का अर्थ है किसी संदेश को एक साथ बहुत बड़े जनसमूह तक पहुँचाना। इसके मुख्य माध्यम हैं समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ (प्रिंट), रेडियो, टेलीविज़न और इंटरनेट।*
- *हर माध्यम की प्रकृति अलग है, इसलिए एक ही समाचार या विषय को हर माध्यम में अलग शैली में लिखना पड़ता है। पाठक पढ़ता है, श्रोता सुनता है और दर्शक देखता तथा सुनता है।*

माध्यम	संप्रेषण का रूप	लेखन की मुख्य विशेषता
प्रिंट	*पढ़ने के लिए*	*विस्तार संभव है। पाठक अपनी गति से पढ़ता और दोबारा भी पढ़ सकता है। शीर्षक, उप-शीर्षक और चित्र का महत्त्व है।*
रेडियो	*केवल सुनने के लिए*	*छोटे और सरल वाक्य। एक बार सुनकर ही बात समझ में आनी चाहिए।*
टेलीविज़न	*देखने और सुनने के लिए*	*शब्द और दृश्य का तालमेल। शब्द दृश्य के साथ चलें, उसे दोहराएँ नहीं।*
इंटरनेट	*पढ़ने, देखने, सुनने के लिए*	*तुरंत प्रकाशन, संक्षिप्तता, हाइपरलिंक और पाठक की भागीदारी (टिप्पणी, साझा करना)।*

प्रिंट माध्यम के लिए लेखन

- *समाचार* ***उल्टा पिरामिड शैली*** *में लिखा जाता है। सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य सबसे ऊपर, फिर कम महत्त्व के तथ्य और अंत में सबसे कम महत्त्व की बातें रखी जाती हैं। इससे स्थान कम पड़ने पर अंत से पंक्तियाँ हटाई जा सकती हैं।*
- *समाचार के अंग हैं —* ***शीर्षक, आमुख (इंट्रो), मुख्य भाग (बॉडी) और समापन****।*
- *आमुख में* ***छह ककार*** *— क्या, कौन, कब, कहाँ, क्यों और कैसे — में से अधिकतम का उत्तर आ जाना चाहिए।*
- *शीर्षक छोटा, सटीक और आकर्षक हो। भाषा सरल, वर्तनी शुद्ध और तथ्य पूरी तरह जाँचे हुए हों।*

रेडियो के लिए लेखन

- *रेडियो सुनने का माध्यम है और श्रोता पीछे लौटकर दोबारा नहीं सुन सकता। इसलिए नियम है —* ***कान के लिए लिखें****।*
- *वाक्य छोटे हों और उनमें एक ही विचार रहे। कठिन, लंबे और उच्चारण में अटकने वाले शब्दों से बचें।*
- *संख्याएँ और आँकड़े गोल करके बोलें, जैसे "3,742" की जगह "लगभग पौने चार हज़ार"। बहुत अधिक आँकड़े श्रोता को याद नहीं रहते।*

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

विशेष लेखन — स्वरूप और प्रकार

(अर्थ · बीट · रूप · भाषा-शैली)

विशेष लेखन क्या है

- ***विशेष लेखन*** *किसी विशेष विषय या क्षेत्र पर किया गया वह लेखन है जिसमें उस विषय की गहरी जानकारी, विश्लेषण और विशेष शब्दावली का प्रयोग होता है।*
- *साधारण समाचार केवल बताता है कि क्या हुआ। विशेष लेखन यह भी बताता है कि वह **क्यों हुआ**, उसका **प्रभाव** क्या होगा और उसका **अर्थ** क्या है।*
- *ऐसा लेखन समाचार-पत्र, पत्रिका, टेलीविज़न और इंटरनेट सभी में होता है। लेखक से अपेक्षा रहती है कि वह उस क्षेत्र का जानकार हो।*

बीट — विशेष लेखन के क्षेत्र

*किसी संवाददाता को सौंपा गया विशेष विषय-क्षेत्र **बीट** कहलाता है। हर बीट की अपनी शब्दावली होती है।*

बीट	विषय	शब्दावली के उदाहरण
खेल	*क्रिकेट, हॉकी, ओलंपिक, फ़ुटबॉल*	*विकेट, ओवर, पदक तालिका, फ़ाइनल*
कारोबार	*शेयर बाज़ार, बजट, उद्योग*	*सेंसेक्स, निफ़्टी, निवेश, मुद्रास्फीति*
फ़िल्म और मनोरंजन	*फ़िल्म, संगीत, टीवी*	*पटकथा, निर्देशन, अभिनय, बॉक्स ऑफ़िस*
राजनीति	*चुनाव, संसद, नीतियाँ*	*मतदान, गठबंधन, विधेयक, घोषणा-पत्र*
विज्ञान और तकनीक	*अनुसंधान, उपग्रह, मोबाइल*	*प्रक्षेपण, एप्लिकेशन, नवाचार*
स्वास्थ्य	*रोग, उपचार, टीकाकरण*	*लक्षण, निदान, रोग-प्रतिरोधक क्षमता*
शिक्षा और पर्यावरण	*परीक्षा, पाठ्यक्रम, प्रदूषण*	*सत्र, परिणाम, कार्बन उत्सर्जन*

विशेष लेखन के प्रमुख रूप

रूप	परिचय	प्रमुख विशेषता
रिपोर्ट	*किसी घटना, विषय या सर्वेक्षण की तथ्यपरक और विस्तृत जानकारी।*	*तथ्यों की सटीकता, आँकड़े और विश्लेषण।*
फ़ीचर	*किसी व्यक्ति, घटना, स्थान या विषय का रोचक, भावपूर्ण और कथात्मक चित्रण।*	*उल्टा पिरामिड आवश्यक नहीं। मानवीय रुचि, आकर्षक शीर्षक और प्रवाहपूर्ण भाषा।*
संपादकीय	*किसी ज्वलंत विषय पर समाचार-पत्र का अपना दृष्टिकोण।*	*संपादक द्वारा लिखा जाता है। इस पर लेखक का नाम नहीं छपता और विचार निष्पक्ष तर्कों पर आधारित होते हैं।*

यह सैंपल प्रति है। पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

सप्रसंग व्याख्या

पद्यांश और गद्यांश की व्याख्या कैसे लिखें

पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या का प्रारूप

(1) संकेतः जन्म से ही ..... शरीर का संगीत

(2)संदर्भः प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह' (भाग-2) से लिया गया है। यह 'आलोक धन्वा' द्वारा रचित कविता 'पतंग' से उद्धृत है। यह कविता उनके एकमात्र काव्य-संग्रह 'दुनिया रोज़ बनती है' का हिस्सा है।

(3) प्रसंगः प्रस्तुत काव्यांश में कवि कहता है कि

.....

(यहाँ 1 लाइन में लिखें कि इन पंक्तियों में मुख्य बात क्या है। जैसेः बच्चों की कोमलता और उनकी निडरता का वर्णन किया गया है।)

(4) व्याख्याः कवि कहता है कि

.....

..... (यहाँ पंक्तियों का सरल अर्थ विस्तार से लिखें)

.....

(5) विशेषः

1. इसमें साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।
2. भाषा अत्यंत सरल, सहज व प्रवाहमयी है।
3. इसमें छंद-मुक्त शैली का प्रयोग किया गया है।
4. बिंब-प्रधान और विवरणात्मक शैली है।
5. इसमें उपमा, अनुप्रास और मानवीकरण अलंकारों का सुंदर प्रयोग हुआ है।
6. इसमें वात्सल्य रस की प्रधानता है।

इस फॉर्मेट में क्या याद रखना है?

1. संदर्भ (Sandarbh): यह पूरी कविता के लिए **फिक्स (Fix)** रहेगा। इसे रट लें।
2. विशेष (Vishesh): ऊपर दिए गए **6 पॉइंट्स** में से पहले **4 (बिंब-प्रधान)** इस पूरी कविता के लिए फिक्स हैं। आप हर उत्तर में इन्हें लिख सकते हैं।
   बदलावः केवल 'प्रसंग' की एक लाइन और 'व्याख्या' वाले हिस्से को प्रश्न के अनुसार बदलना होगा।

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

उदाहरण — पतंग (पद्यांश)

प्रश्न — *निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –*

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध छतों को नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अक्सर
छतों के खतरनाक किनारों तक –
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ़ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत

उत्तर

संदर्भ: *प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक (आरोह, भाग-2) में संकलित कविता 'पतंग' से अवतरित है। इसके रचयिता समकालीन हिंदी कवि आलोक धन्वा हैं। यह कविता उनके एकमात्र काव्य-संग्रह 'दुनिया रोज़ बनती है' से ली गई है।*

प्रसंग: *इस काव्यांश में कवि ने बच्चों की सुकोमलता, उनकी शारीरिक चंचलता और पतंग उड़ाते समय उनकी तल्लीनता (बेसुधपन) का सजीव चित्रण किया है। कवि ने यहाँ यह भी दर्शाया है कि कैसे बच्चे छतों के खतरनाक किनारों पर भी अपने शरीर के रोमांच और उत्साह के सहारे संतुलन बनाए रखते हैं।*

व्याख्या: *कवि कहते हैं कि बच्चे जन्म के साथ ही अर्थात् जब वे जन्म लेते हैं तभी से उनका शरीर कोमल रूई के समान हल्का होता है। उनकी कोमलता का स्पर्श करने के लिए स्वयं पृथ्वी भी उनके व्याकुल पैरों के पास आती है।*

जब वे बेसुध होकर आस-पास की स्थिति को जाने बिना दौड़ते हैं, तब उनके पैरों के स्पर्श से कठोर छतें भी कोमल बन जाती हैं। उनके भागते पैरों की आवाज से प्रतीत होता है कि चारों दिशाएँ मृदंग की भाँति मधुर संगीत निकाल रही हों। वे पतंग उड़ाते हुए झूले की भाँति पेंग भरते हुए आगे-पीछे होते हुए दौड़ते हैं। उस समय बच्चों का शरीर पेड़ की डालियों की तरह लचिलापन लिये हुए रहता है। झुकना, मुड़ना, दौड़ना, कूदना सारी क्रियाएँ वे शरीर के लचीलेपन के कारण ही कर पाते हैं।

कवि बताते हैं कि पतंग उड़ाते समय बच्चे छतों के खतरनाक किनारों तक आ जाते हैं, जहाँ अगर ध्यान न दिया जाये तो गिरने जैसी दुर्घटना का डर बना रहता है। यहाँ उन्हें कोई बचाने के लिए तेजी से प्रस्तुत नहीं हो सकता है। केवल गिरने के भय से उत्पन्न हुआ उत्साह ही रोमांच बन कर उन्हें बचाता है।

विशेष :

1. *बिंब और उपमा: 'कपास' का प्रयोग कोमलता के लिए और 'डाल की तरह लचीले' में उपमा अलंकार है।*

यह सैंपल प्रति है । पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400

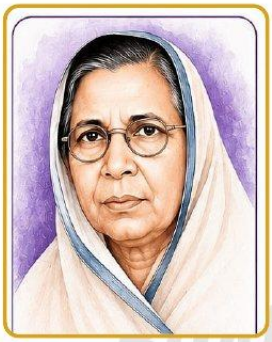

महादेवी वर्मा

गद्य खंड पाठ्यपुस्तक में : **भक्तिन (पाठ 10)**

जन्म	26 मार्च, 1907 ई.
जन्म स्थान	फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश
पिता का नाम	गोविन्द प्रसाद वर्मा
माता का नाम	हेमरानी देवी
शिक्षा	इलाहाबाद; संस्कृत में एम.ए.; बाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य
मृत्यु	11 सितम्बर, 1987 ई.

प्रमुख कृतियाँ

विधा	प्रमुख रचनाएँ
काव्य	नीहार (1930), रश्मि (1932), नीरजा (1934), सांध्यगीत (1936), दीपशिखा (1942); संकलन — यामा
संस्मरण / रेखाचित्र	अतीत के चलचित्र (1941), स्मृति की रेखाएँ (1943), पथ के साथी (1956), मेरा परिवार
निबंध	श्रृंखला की कड़ियाँ (1942), क्षणदा (1956), साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध

पुरस्कार एवं सम्मान

1956 **पद्म भूषण**
साहित्य के क्षेत्र में योगदान के लिए।

1979 **साहित्य अकादमी फेलोशिप**
यह सम्मान पाने वाली पहली महिला।

1942 **द्विवेदी पदक**
'स्मृति की रेखाएँ' के लिए।

1983 **ज्ञानपीठ पुरस्कार**
काव्य-संकलन 'यामा' के लिए।

1988 **पद्म विभूषण**
मरणोपरांत।

जीवन परिचय

महादेवी वर्मा का जन्म **26 मार्च, 1907** ई. को उत्तर प्रदेश के **फर्रुखाबाद** में हुआ। उनके पिता का नाम गोविन्द प्रसाद वर्मा तथा माता का नाम हेमरानी देवी था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर और इंदौर में हुई, आगे की शिक्षा इलाहाबाद में हुई और उन्होंने **संस्कृत में एम.ए.** किया। बाद में वे **प्रयाग महिला विद्यापीठ** की प्रधानाचार्य तथा कुलपति बनीं और नारी-शिक्षा के लिए उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया। **11 सितम्बर, 1987** ई. को इलाहाबाद में उनका निधन हुआ।

साहित्य परिचय

महादेवी वर्मा **छायावाद** की चार प्रमुख स्तंभों (प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी) में से एक हैं। उनके काव्य में **वेदना, करुणा, रहस्यानुभूति** और नारी-मन की गहन संवेदना मिलती है; इसी कारण उन्हें '**आधुनिक मीरा**' भी कहा जाता है। काव्य के साथ-साथ '**अतीत के चलचित्र**', '**स्मृति की रेखाएँ**' और '**पथ के साथी**' जैसी गद्य रचनाएँ भी अत्यंत प्रसिद्ध हैं। पाठ्यपुस्तक में संकलित '**भक्तिन**' उनके संस्मरणात्मक रेखाचित्र-संग्रह 'स्मृति की रेखाएँ' से लिया गया है।

यह सैंपल प्रति है। पूरे नोट्स (9 भाग, 114 पृष्ठ) के लिए WhatsApp करें: 921-6765-400